

## महादेवी वर्मा के संस्मरणात्मक रेखाचित्रों में मानवीय संवेदना

प्रो. सुकर्मवती देवी

हिंदी विभाग, इंस्टीट्यूट ऑफ इंटीग्रेटेड एंड ऑनर्स स्टडीज, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र

### शोध सारांश

महादेवी वर्मा के संस्मरणात्मक रेखाचित्रों में मानवीय संवेदनाओं की अभिव्यक्ति जमीनी धरातल से जुड़ी हुई है। हरेक पात्र को महादेवी वर्मा ने इस तरह बना है कि उसका समूचा व्यक्तित्व पूरे समाज की भुरभुरी व्यवस्था को उधेड़ रहा हो। उनके पात्रों के जीवन संघर्ष को खोखला और निर्णायक साबित करने में समाज कोई कसर नहीं छोड़ता। स्वामीभक्त रामा, विधवा माँ का एकमात्र पुत्र निडर घीसा, बिबिया, अभागिन बिन्दा, चीनी फेरीवाला, जंग बहादुर और धनसिंह नामक पहाड़ी कुली, भक्तिन (लक्ष्मी), हरिजन जाति की उपेक्षित सबिया, स्नेह से परिपूर्ण अन्धा अलोपी आदि पात्र श्रमनिष्ठा, अटूट प्रेम, विश्वास और समर्पण का अद्भुत नमूना प्रस्तुत करते हैं। परंतु जंग खाए हुए जर्जरित समाज में अपने मूल्यों को कायम रखने की जद्दोजहद में अधिकांशतः जीवन की समाप्ति की ओर चले गए। महादेवी वर्मा जितनी गहराई से मानव जगत से जुड़ी उतनी ही तल्लीनता से प्राणी जगत की ओर आकर्षित हुईं। महादेवी वर्मा की अंतरंग संवेदना का ही परिणाम था कि उनका साहित्य कमजोर वर्ग की थाती बना। सुंदर व सुव्यवस्थित जीवन कैसे नरक में धँस जाता है, महादेवी वर्मा उसकी तह तक पहुँच जाती हैं। उनके शब्द चित्रों की झाँकी सजीव जीवन की यथार्थ अनुभूति को दर्शाने में समर्थ हैं। महादेवी वर्मा की यह आत्मीय मानवीय संवेदना हमें आदर्शवादी सोच का एक विस्तृत नया आयाम प्रदान करती है।

**बीज शब्द :** महादेवी वर्मा, संस्मरणात्मक, रेखाचित्र, मानवीय संवेदना।

### मुख्य आलेख

आधुनिक मीरा के नाम से जाने वाली बहुमुखी प्रतिभा संपन्न, साहित्य और संस्कृति की जीती जागती प्रतिमूर्ति लोकदृष्टा साहित्यकार, ऋग्वेद की मार्मिक अनुवादिका, कुशल शिक्षाविद, गम्भीर वक्ता तथा एक प्रसिद्ध छायावादी कवयित्री होने के साथ-साथ समाजसेवी महादेवी वर्मा संवेदना को अपने जीवन का परम आदर्श मानती हैं। उत्कृष्ट गद्य लेखिका महादेवी वर्मा 'गद्य कविनां निकषं वदन्ति' की उक्ति पर खरी उतरती हैं। उनके गद्य में विविध पहलुओं की भावुक छवि चित्रित है। वे दीन-हीन, असहाय, विवश मानव जाति का कल्याण करने के लिए अति संवेदनशील हैं। यही कारण है कि उनके साहित्य की हर पंक्ति में मानवीय करुणा व्याप्त है। उनकी साहित्यिक प्रतिभा को देखकर ही देश के प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेंद्र प्रसाद ने उनका सम्मान करते हुए कहा था - "श्रीमती महादेवी वर्मा केवल उच्चकोटि की साहित्यकार ही नहीं बल्कि भारतीय महिला की सांस्कृतिक परंपरा की प्रतीक भी हैं।" उन्होंने अपने संस्मरणों एवं रेखाचित्रों के माध्यम से भारतवर्ष के युग-युग से शोषित एवं पीड़ित ग्रामीण जीवन के असमर्थ पात्रों की समस्याओं को नजदीक से जाकर देखा और अपने अनुभवों को संकलित कर उन्हें प्रस्तुत किया।

वर्तमान में संवेदना शब्द का प्रयोग सहानुभूति के अर्थ में होने लगा है। 'वेदना' शब्द से पहले 'सम्' उपसर्ग जोड़ने से 'संवेदना' शब्द की उत्पत्ति होती है। 'वेदना' का सामान्य अर्थ है दुःख, कष्ट या पीड़ा। 'सम्' शब्द का अभिप्राय है-समान। इसलिए 'संवेदना' शब्द का अर्थ हुआ- समान वेदना या समान दुःख। संपूर्ण मनोविज्ञान तथा साहित्य संवेदना पर ही आधारित है, यह कहने में बिलकुल भी अतिशयोक्ति नहीं है। ज्ञानेन्द्रियों का अनुभव ही वास्तव में संवेदना को

जागृत करता है। अमृत राय लिखते हैं- “महादेवी का गद्य साहित्य मूलतः समाज केंद्रित है। उसने समाज के दुख, दैन्य, उसके स्वार्थों और अभिशापों का प्रतिकार किया है, उसमें एक विद्रोह की आत्मा रुदन कर रही है। उसका मूल उत्स अपनी पीड़ा में नहीं, समाज में दिन-रात चलने वाले अन्यायों और अत्याचारों में है।”<sup>2</sup> उनका गद्य साहित्य जीवन की सत्यता को उजागर करता है। उन्होंने अपनी गद्य रचनाओं- अतीत के चलचित्र, स्मृति की रेखाएँ, श्रृंखला की कड़ियाँ, मेरा परिवार एवं क्षणदा आदि में उपेक्षित एवं अशिक्षित ग्रामीण समाज एवं मानवेतर प्राणी जगत के प्रति गहरी सहानुभूति प्रकट करते हुए उनका चित्रण अत्यधिक सचेष्टता के साथ किया है।

बिबिया पात्र की अकाल मौत पर महादेवी जी समाज की संवेदनहीनता पर गहरी चोट करती हैं। जीवन पथ पर पराजित बिबिया में यद्यपि स्वाभिमान कूट-कूट कर भरा हुआ है। लेखिका लिखती हैं कि उसका यह गुण ही उसे बार-बार अंधकार की एक नई दुनिया में धकेल देता है- “ उसके स्वभाव में स्वाभिमान की मात्रा इतनी थी कि वह दोष की सीमा तक पहुँच जाती थी।”<sup>3</sup> गाय की तरह एक खूँटे से दूसरे खूँटे पर बाँधी जाने वाली वह नायिका दुश्चरित्र समाज द्वारा कलंक लगाने से अछूती न रह सकी और उसने अपने जीवन की पवित्र बेला को यमुना के हवाले कर दिया। नृशंस समाज के सामने उसका स्वाभिमान, उसकी ममता, उसकी समझदारी, उसका संघर्ष सब बौना पड़ जाता है। अंत में हर मुसीबत से लड़ने वाली बिबिया परंपरागत समाज से हार जाती है।

अभागिन बिन्दा के प्रति महादेवी के अनुभव संवेद्य-सूक्ष्म स्नेह से अतिरंजित होकर अणु-अणु में घुल-मिल गए थे। सौतेली माँ द्वारा सताई जाने वाली बिन्दा कभी अकारण गर्मियों की तपती दोपहरी में फर्श पर घंटों खड़ी रहती, तो कभी भूखी रहती, तो कभी झूठे लांछनों पर असहनीय पीड़ा सहन करती। विमाता से ही प्रताड़ित होकर ग्रामीण स्वामीभक्त रामा, निस्सहाय व भूख से तंग आकर, महादेवी के परिवार के सदस्यों का सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार पाकर आजीवन घरेलू सदस्य के रूप में अपना स्थान बना लेता है। पर उसका दाम्पत्य जीवन बीच राह में ही दम तोड़ देता है। पत्नी का शहर के नए परिवेश से तालमेल नहीं बिठा पाने के कारण वह मनाने पर भी अपने मायके से वापस नहीं लौटती। लेखिका की दृष्टि में- “रामा आज भी सत्य है, सुंदर है और स्मरणीय है। मेरे अतीत में खड़े रामा की विशाल छाया वर्तमान के साथ बढ़ती ही जाती है- निर्वाक, निस्तंद्र पर स्नेह तरल।”<sup>4</sup> रामा जैसे व्यक्तियों की मुश्किलें आज भी समय के साथ बढ़ती जा रही हैं। कितनी गृहस्थियाँ बिना किसी वजह के बर्बाद होकर उजड़ जाती हैं।

विमाता के अत्याचारों को सहन करता चीनी फेरीवाला बाल्यावस्था में किस तरह रात में अपनी बहन की गोद में सिर रखकर अपनी भूख भुलाता था। विमाता द्वारा बहन को वेश्यावृत्ति के लिए मजबूर करने पर वह हमेशा-हमेशा के लिए घर छोड़कर चली जाती है। बहन की खोज में वह बालक मारा-मारा फिरता है। जवानी में कपड़ों की फेरी लगाकर ईमानदारी की रोटी खाता है। महादेवी वर्मा उसकी देशभक्ति की भावना से अत्यंत प्रभावित होकर एक रेखाचित्र निर्मित कर देती हैं। उन्होंने विषम सामाजिक परिस्थितियों से उपजी घुटन के कारण मनुष्य जीवन को अपनी आँखों से तार-तार होते देखा था।

अपनी बट्टीनाथ यात्रा के दौरान महादेवी वर्मा ने जंग बहादुर और धनसिंह नामक पहाड़ी कुलियों के माध्यम से उत्पीड़ित वर्ग के कष्टमय जीवन, मजदूरों के शोषण की कथा सुनी और उसे अपनी आँखों से देखकर, गरीब और शोषित वर्ग के प्रति गहरी संवेदना व्यक्त की, जो अपनी साँसों की चिंता किए बिना सम्पन्न घराने की महिलाओं को डाँडी में बैठाकर कम मजदूरी में अधिक यात्रा तय कराकर अपनी इच्छा न होने पर भी उनकी अंतिम इच्छा को तृप्त करते हैं। उनकी सहृदयता और ममता की छवि को देखकर महादेवी उनकी चारित्रिक दृढ़ता का परिचय पाठकों से करवाती हैं। पूँजीपति

वर्ग की मानवता मर चुकी है, पशु तुल्य जीवन जीने वाली अदृश्य उद्यमी कौम को सबसे अवगत कराती हैं- “वे बेचारे मनुष्य-पशु हाँफ-हाँफ मुँह से फिचकुर निकालते हुए दौड़ते हैं।”<sup>5</sup>

उन्होंने अपनी कलम से ऐसे कर्मठ एवं रचनाशील पात्र सृजित किए हैं जो अपनी ईमानदारी, सादगी व संघर्ष में ही अपने अधिकारों की सीमा निर्धारित करते हैं। शचीरानी गुर्दू लिखती हैं- “विश्व के किसी कोने से किसी की भी पीड़ा की कहानी सुनकर इनका मन उसकी पीड़ा में डूब जाता है। अपने द्वारा वे किसी को पीड़ा पहुँचाना नहीं चाहती। इसलिए वह कभी भी आदमी से खींचे जाने वाले रिक्शा में नहीं बैठती।”<sup>6</sup> उच्चवर्गीय परिवारों की संवेदनहीनता के परिणामस्वरूप सामाजिक व्यवस्था के विकृत और जटिल हो जाने पर महादेवी वर्मा समाज में व्याप्त शोषण और उत्पीड़न को गद्य साहित्य में स्थान देती हैं।

बाल्यावस्था की एक घटना ने महादेवी वर्मा को इतने गहरे तक प्रभावित किया, जिससे वे आजीवन मुक्त नहीं हो सकीं। भारतीय समाज की अव्यवस्था के परिणामस्वरूप सालभर में ही विधवा होने वाली ‘भाभी’ का जीवन नरकमय हो जाता है। कुल सँवारने वाली अब कुल विनाशिनी घोषित कर दी जाती है। बाहर की दुनिया देखने को वह तरसती है। साज-श्रृंगार से कोसों दूर रहकर भूख-प्यास को सहन करती दुर्बल भाभी घर के कामों में व्यस्त रहती है। एक दिन अवसर पाकर जब बालिका महादेवी अपने हाथों से काढ़ी हुई फूलों की ओढ़नी उनके सिर पर सजा देती है, उसका परिणाम उसे ससुर व ननद की मार से तन-मन की मूर्छा के रूप में भुगतना पड़ता है। अबोध बालिका के मन में अबला नारी के प्रति संवेदना जागृत हो उठती है- “उस 17 वर्षीय युवती की दयनीयता आज समझ पाती हूँ, जिसके जीवन के सुनहरे स्वप्न गुड़ियों के घरौंदे के समान दुर्दिन की वर्षा में केवल बह ही नहीं गए, वरन् उसे इतना एकाकी छोड़ गए कि स्वप्नों की कथा कहना भी संभव न हो सका।”<sup>7</sup> ऐसा लगता है मानो हमारे हिन्दू धर्म का संपूर्ण अस्तित्व ही उस विधवा स्त्री के सतीत्व पर टिका हुआ हो। इस प्रकार एक विधवा का जीवन खोखले रीति-रिवाजों का बोझ ढोते-ढोते अनेक कुप्रथाओं की चक्की में पिसता रहता है।

समाज के इस कमजोर वर्ग के प्रति किसी की सहानुभूति नहीं थी। बाल-विवाह, अनमेल विवाह, वेश्यावृत्ति, दहेज प्रथा, अशिक्षा एवं पुरुष प्रधान समाज आदि अनेक कारण थे, जिनके कारण समाज का एक वर्ग अबोध अवस्था में ही कुचला जाता था। अपनी दयनीय अवस्था को ही अपना भाग्य मानकर निरन्तर अपने अंतर्मन की सिसकियों को दबाकर हड्डियों का वह पुतला कैसे अंधभक्त संसार में अपना जीवन गुजर-बसर कर गया। उसकी कल्पना मात्र से आज भी रूहें अंदर तक काँप जाती हैं। महादेवी वर्मा जी परिवार पर बोझ मानी जाने वाली उस स्त्री की लौह श्रृंखलाओं को तोड़ना चाहती थीं, जिसने उसे कसकर बाँधकर उसके शरीर के खून को निचोड़ लिया था। अपनी कविताओं में भी वे उसे सबला बनाने के लिए जड़ मान्यताओं के पिंजरे से उन्मुक्त करवाने के पक्ष में हैं -

“कीर का प्रिय आज पिंजर खोल दो।

हो उठी है चंचु छूकर,

तीलियाँ भी वेणु सस्वर,

बंदिनी स्पंदित व्यथा ले,

सिहरता जड़ मौन पिंजर,

आज जड़ता में इसी को बोल दो।

जग पड़ा छू अश्रु - धारा,

हत परो का विभव सारा,

अब अलस बंधी युगों का -

ले उड़ेगा शिथिल कारा।”<sup>8</sup>

बच्चों के हँसने-खेलने, रुठने, प्रसन्न होने, बच्चों की दावत, उनके खिलाने, उनके क्रियाकलाप को देखकर महादेवी जी की संवेदनाएँ अभिव्यक्त होती हैं। बालकों के प्रति अप्रतिम स्नेह व्यक्त करता उन्हीं की पाठशाला का एक विद्यार्थी, विधवा माँ का एकमात्र पुत्र निडर घीसा जब बीमार पड़ता है तो उसको देखने की उद्विग्न जिज्ञासा महादेवी को उसके घर तक खींच ले जाती है। गरीब बालक के प्रति उनकी गहरी मानवीय संवेदना पाठक के अंतर्मन पर अविस्मरणीय छाप छोड़ जाती है। मानवीय मूल्यों के संरक्षण की संवेदना महादेवी जी की सेविका भक्तिन (लक्ष्मी) का दुर्भाग्य देखिए कि बड़े दामाद की मृत्यु हो जाने पर परिवार के लोगों की हीन हरकतों से उनकी बेटी का जीवन संज्ञाहीन एवं पंगु पशु की भाँति नरक बना दिया जाता है। जेठ के साले के रूप में दामाद को न चाहते हुए भी स्वीकार करना भक्तिन की सबसे बड़ी मजबूरी बन गई है। अशिक्षित व स्वार्थी समाज के अनैतिक निर्णय का खामियाजा असहाय विधवा को तिल-तिल कर मरने के रूप में भुगतना पड़ता है- “दामाद अब निश्चित होकर तीतर लड़ाता था और बेटी विवश क्रोध में जलती रहती थी। इतने यत्न से संभाले हुए गाय- ढोर, खेती-बारी सब पारिवारिक द्वेष में झूलस गए।”<sup>9</sup> उसकी उदारता एवं सहनशीलता का दुरुपयोग करते हुए असाधारण धैर्य का अनुचित लाभ स्वाभिमानी भक्तिन के अन्तर्मन में पारिवारिक रिश्तों की ताकत भस्म होकर धूल में मिल जाती है।

थोथी मानसिकता के दोषी ऐसे लोगों की संवेदना मर चुकी है। सामाजिक वातावरण में पनप रही यह गलत सोच सुंदर समाज व्यवस्था के लिए अवरोधक है। महादेवी वर्मा अन्याय के प्रति स्वभाव से असहिष्णु हैं, वे लिखती हैं- “नारी केवल मांसपिंड की संज्ञा नहीं है। आदिमकाल से आज तक विकास पथ पर पुरुष का साथ देकर, उसकी यात्रा को सरल बनाकर, उसके अभिशापों को स्वयं झेलकर और अपने वरदानों से जीवन में अक्षय्य शक्ति भरकर मानवी ने जिस व्यक्तित्व, चेतना और हृदय का विकास किया है, उसी का पर्याय नारी है।”<sup>10</sup> उसकी भावनात्मक दुर्बलता का लाभ उठाकर अनेक बार उस निर्दोष को षड्यंत्र द्वारा दुःख की अथाह कारा में घुट-घुट कर मरने को विवश किया जाता है।

पति द्वारा परित्यक्ता, वार्तालाप करने में असमर्थ व वात्सल्य मूर्ति गुंगिया के बेटे हुलासी के बिछुड़ने पर कुछ हद तक उसके दुखों को दूर करना एवं महादेवी द्वारा आर्थिक सहायता प्रदान करवाने का सहानुभूतिपूर्ण कार्य मानवता का ही परिचायक है। भविष्य के संबंध में अनिश्चित गुंगिया के माध्यम से यहाँ संघर्षशील नारी की अपराजेय शक्ति उभर कर सामने आती है। हरिजन जाति की उपेक्षित सबिया के धैर्य की पराकाष्ठा देखिए कि अपने पति द्वारा सौतन के लिए जाने पर भी मैकू के प्रति उसके मन में कोई द्वेष भाव नहीं है। वह इसका विरोध तक नहीं करती अपितु पति-सुख में ही अपना सुख मानती है। अंत में पति की निरंतर उपेक्षा उसके पतिव्रत व ईमानदार चरित्र को खोखला कर देती है- “सबिया का मन टूट गया, क्योंकि वह कभी नीम से सिर टिकाकर रो लेती है और कभी झाड़ू देते-देते रुककर आँसू पोंछने लगती हैं।”<sup>11</sup> स्त्री होने के कारण महादेवी ने सबिया जैसी नारियों की वेदना को गहराई तक महसूस किया है और जहाँ तक संभव हो सका है उनकी समस्याओं का समाधान करने का भी हर संभव प्रयास किया है। कोमलता और सहानुभूति के साथ साहस तथा विवेक के सामंजस्य से परिपूर्ण चरित्र जब अपने आप को सहेज नहीं पाते तो उस समाज के वंचक वर्ग के हौसले बुलंद होते हैं।

बदलू की पत्नी रथिया के पास बच्चे के जन्म के समय नाल काटने के लिए पैसे न होने से उनकी अभावग्रस्तता का चित्रण बड़े ही सहानुभूतिपूर्ण ढंग से किया है। बाल विधवा बिट्टो का नैसर्गिक जीवन अपने ही घर की औरतों को रास नहीं आता। भाभियों के शारीरिक और मानसिक अत्याचार सहन करती हुई निर्दोष बालिका सोचने पर मजबूर हो जाती है कि “जिस घर में नौकर चाकरों को सब सुविधाएँ उपलब्ध हैं, तब उसी के घर में उसके लिए स्थान क्यों नहीं है। माता-पिता जब तक जीवित थे, सब कुछ सही चल रहा था। जैसे ही उन्होंने इस संसार से विदा ली, सभी वस्तुओं का मूल्य देखते ही देखते बदल गया।”<sup>12</sup> विधवा स्त्री के प्रति होने वाले क्रूर व्यवहार की निंदा को लेकर महादेवी वर्मा अत्यंत आहत थीं कि क्रंदन करने वाली बिट्टो अपने अबोधपन के कारण न तो विवाह की गंभीरता को समझती थी और न ही वैधव्य की निराशा को। विवाह का मंगल-कंकण किस प्रकार उसके सम्पूर्ण जीवन को रुदन-कंकण में तब्दील कर देता है, इसे देखकर करुण मानवीय संवेदना भी आहत हो जाती है।

मानसिक विकास की दृष्टि से विकलांग लछमा के पति की संपत्ति को हड़पने के लिए धनलोलुपता से युक्त जेठ ने लछमा को मारने का क्रूर ताण्डव रचा। उसे तब तक पीटा गया जब तक कि वह बेहोश नहीं हो गई और अंत में उसे मरा हुआ समझकर गड्ढे में छिपा दिया। भाई के जीवित होने पर भी परिवार में ईर्ष्या-द्वेष, कूटनीति एवं कृत्रिम व्यवहार की पराकाष्ठा का इससे जीवन्त उदाहरण और क्या हो सकता है? पहाड़ी लछमा के जीवन की अकथ कहानी को सुनकर संवेदना भी भीग जाती है। ‘ठकुरीबाबा’ में ठकुरी की पत्नी भी इसी तरह के अमानवीय व्यवहार का शिकार होकर मृत्यु को प्राप्त होती है। आज का व्यक्ति इतना स्वार्थी और धनलोलुप तथा ईर्ष्या में इतना अंधा हो चुका है कि वह रिश्तों को तार-तार करने में शर्म महसूस नहीं करता। ऐसी जमी हुई संवेदना का पिघलना नामुमकिन ही नहीं असंभव सा लगता है। मानवीय हृदयों की इस अमानुषिकता को देखकर महादेवी की चेतना चिंतित हो उठती है- “युगों के अनवरत प्रवाह में बड़े-बड़े साम्राज्य बह गए, संस्कृतियाँ लुप्त हो गई, जातियाँ मिट गई, संसार में अनेक असंभव परिवर्तन संभव हो गए, परंतु भारतीय स्त्रियों के ललाट में विधि की वज्रलेखनी से अंकित अदृष्ट लिपि नहीं धुल सकी।”<sup>13</sup> मध्यम तथा निम्न वर्ग की स्त्रियों की स्थिति पर विचार करते हुए उन्होंने स्वयं उनकी शून्य दिनचर्या का कटु अनुभव करते हुए बताया है कि वे अपने आलोकित जीवन के निष्क्रिय पथ में अपने ही आदर्शों में बँधकर ठगी जाती रही हैं।

स्नेह से परिपूर्ण अन्धा अलोपी अपनी बूढ़ी माँ पर बोझ नहीं बनना चाहता। वह अपने असमर्थ शरीर से छात्रावास की छात्राओं के लिए चाहे मूसलाधार बारिश हो, कड़ाके की ठंड हो या लू से तपती दोपहरी, वह अपनी आँखों के अंधकार को भीतर ही बंदी बनाकर देहात से सस्ती और अच्छी तरकारी लाने का काम करता था। महादेवी जी लिखती हैं कि चाहे कोई भी पर्व या उत्सव हो, अलोपी के नियम में कभी कोई व्यक्तिगत कार्यक्रम नहीं देखा गया- “इतना ही नहीं दंगे के समय भी जान की परवाह किए बिना तरकारियाँ पहुँचाता है। अंधा अलोपी परिश्रम करके रोटी की समस्या सुलझा सकता है तो देश में दो आँखों वाले अलोपी क्या कुछ नहीं कर सकते? देश का युवाधन अंधा अलोपी की तरह परिश्रम करेगा तो देश कभी गरीबी की कगार पर खड़ा नहीं होगा।”<sup>14</sup> इस प्रकार अलोपी का जीवन आधुनिक समाज को बहुत बड़ा संदेश दे जाता है।

महादेवी वर्मा स्वभाव से ही संवेदनशील थीं। दीन-दुखी, गरीब, उपेक्षित, प्रताड़ित जन के लिए उनके मन और घर के द्वार हमेशा खुले रहते थे। अपने अध्यक्षीय भाषण में उन्होंने कहा था कि “एक सफल साहित्यकार के लिए यह आवश्यक है कि वह संवेदना को अपनी साहित्य साधना का मूलधार बनाए। संवेदना जितनी गहरी होगी लेखन उतना ही सशक्त होगा। मानवता को एक-सूत्र में बाँधने का एकमात्र साधन है संवेदना। एक संवेदनशील साहित्यकार को अपनी आत्मघाती प्रवृत्ति को रोकना होगा। अपनी पीड़ा न देख कर जगत की पीड़ा देखनी होगी। एक व्यापक दृष्टिकोण

अपनाना होगा तभी वह अपने उद्देश्य में सफल हो सकेगा।”<sup>15</sup> इसी से प्रेरित होकर उन्होंने अपनी इक्कीस सौ रुपये की पुरस्कार राशि एवं चाँदी का कटोरा बापू को देश की सेवा के लिए समर्पित कर दिया था। सन् 1943 में ही बंगाल में पड़ने वाले भीषण अकाल में कलकत्ता की सड़कों पर मरने वाले बेबस व लाचार लोगों के तैलचित्र जो महादेवी वर्मा जी द्वारा बनाए गए और उनकी ‘भूवंदना’ नामक कविता ‘बंगदर्शन’ में प्रकाशित होने पर जो धनराशि प्राप्त हुई वह सरोजिनी नायडू के पास भिजवा दी ताकि अकालपीड़ितों की तत्काल मदद की जा सके। चित्रकला के माध्यम से कलात्मक अभिव्यक्ति के ये चित्रण उनकी संवेदना को परखने के लिए पर्याप्त हैं।

उनकी संवेदना केवल मानवीय जगत तक ही सीमित नहीं थी वरन् पशु-पक्षी जगत तक अनंत रूप में व्याप्त थी। प्रयाग में सचमुच उनका अपना एक पशु-पक्षियों का परिवार था जिनके साथ वे अत्यंत आत्मीयता व स्नेह के साथ वास करती थीं। वे पशु-पक्षियों को अपना प्रथम संगी स्वीकार भी करती हैं। वे बाल्यावस्था से ही इस जगत के प्रति अति संवेदनशील रही हैं। ऐसा लगता है कि उनके अव्यक्त जीवन को व्यक्त करने में महादेवी वर्मा ने अपनी सारी शक्ति जुटा दी है। छठी क्लास में छात्रावास में रहते हुए मुर्गी के एक बच्चे के कम होने पर रोना और तब तक खाना नहीं खाना, जब तक उसे वापस न लाया जाए, उनके पशु-पक्षी जगत के प्रति आत्मीय लगाव को दर्शाता है। महादेवी जी स्वयं लिखती हैं- “अतीत में मिले-खोए व्यक्तियों या पशु-पक्षियों को स्मरण करते समय कभी-कभी मेरे इतने आँसू गिरे हैं कि ये लिखा हुआ कागज गीला हो जाने के कारण नष्ट हो गया और कभी-कभी हँसी ने मुझे इतना अस्थिर कर दिया है कि लिखावट टेढ़ी-मेढ़ी हो गयी है। मेरे संस्मरणों में मेरे आँसू हँसी के ही नहीं, अनेक तीव्र आवेगों के गहरे चिह्न अलग-अलग पहचाने जा सकते हैं।”<sup>16</sup> पशु-पक्षियों की साधारण क्रियाओं को साहित्यिक रूप प्रदान कर उनके अव्यक्त एवं उपेक्षित जीवन को आत्मीयता से भरकर अपनी कमाई का एक बहुत बड़ा हिस्सा उन पर खर्च करना महादेवी जी की संवेदना-प्रतिभा को आभासित करता है। महादेवी वर्मा के रेखाचित्रों की रचना प्रक्रिया उस स्थूल व सूक्ष्म जीव चरित्र की घटनाओं की मूर्तता को गहरी आत्मीयता व ऊष्मता के साथ अभिव्यक्त करती है।

उनकी संवेदना समग्र समाज के विकास में दिखाई देती है। सभ्यता और संस्कृति को विनष्ट करने वाले त्वरित सामाजिक परिवर्तनों से महादेवी वर्मा त्रस्त हो उठी हैं। इसलिए वे व्यक्तिगत हित के स्थान पर लोकहित को प्रधानता देती हैं। महादेवी जी की साहित्यिक साधना को देखकर ओंकार शर्मा लिखते हैं- “महादेवी का गद्य साहित्य मूलतः समाज के वर्तमान रूपक से पूरी तरह जुड़ा है। उनका गद्य जन-जन के पीड़ित जीवन का आर्त स्वर है। लेकिन वह किसी हारे हुए विद्रोही का स्वर नहीं, अँगड़ाई लेकर उठने को बेचैन विद्रोही की हुँकार है। महादेवी का गद्य कर्मनिष्ठ, आक्रोशपूर्ण, निर्भय, सहज, संवेदनशील और प्राणों में ओज भरने की प्रेरणा देने वाला है। उनका गद्य मुर्दे में कफन फाड़ कर उठ बैठने की शक्ति संचारित करता है।”<sup>17</sup> जीवन के अनेक रंगों को उन्होंने अपनी लेखनी से ही गहरी संवेदना के साथ चित्रित किया है।

महादेवी वर्मा आधुनिक समाज के प्रति अत्यधिक जागरूक रही हैं, एक आदर्श समाज को लेकर उनका चिंतन हमेशा ही वंदनीय रहा है। वर्तमान में आदर्श जीवन मूल्यों के गिरते स्तर से समाज में व्यक्तिगत स्वार्थों के प्रयोग से चहुँ ओर असंतुलन बढ़ रहा है। ऐसा प्रतीत होता है कि जो करुणा उनके काव्य में ऊर्जस्वित हो रही है, वही करुणा गद्य साहित्य का बीजवपन कर रही है। उनके रेखाचित्र केवल कहानियाँ भर नहीं हैं अपितु समाज के हर कोने से उपेक्षित वर्ग के प्रति निःस्वार्थ प्रेम की तरल झाँकियाँ हैं। इस प्रकार महादेवी की यह सहानुभूति विश्वव्यापी संवेदना में परिवर्तित हो गई है। उन्होंने किसी जाति विशेष को ध्यान में रखकर उसकी संवेदनशून्यता का चित्रण ही नहीं किया अपितु उन्होंने समाज, धर्म, अर्थ, संस्कृति, शिक्षा और राजनीति आदि विषयों की समस्याओं का समाधान व्यावहारिक रूप से प्रस्तुत

भी किया है। उनका मानना था कि समकालीन समय में जो कुछ भी अनुपयोगी पनप रहा है, अगर समय रहते उसका समाधान नहीं किया गया तो वह भविष्य में और अधिक घातक साबित होगा।

**संदर्भ ग्रंथ सूची:**

1. डॉ. दुर्गा शंकर मिश्र, महादेवी का काव्य : एक विश्लेषण, पृ. 9
2. डॉ. गौवर्द्धन सिंह, महादेवी का गद्य साहित्य : विश्लेषण और स्वरूप, पृ. 129
3. सं. निर्मला जैन, महादेवी साहित्य- 3, पृ. 135
4. महादेवी वर्मा, अतीत के चलचित्र, पृ. 23
5. महादेवी वर्मा, स्मृति की रेखाएँ, पृ. 35
6. सं. शचीरानी गुट्टू, महादेवी वर्मा काव्य-कला और जीवन-दर्शन, पृ. 29-30
7. महादेवी वर्मा, अतीत के चलचित्र, पृ. 27
8. महादेवी वर्मा, यामा, पृ. 99
9. महादेवी वर्मा, स्मृति की रेखाएँ, पृ. 12
10. सं. निर्मला जैन, महादेवी साहित्य - 4, पृ. 193-194
11. महादेवी वर्मा, अतीत के चलचित्र, पृ. 41
12. महादेवी वर्मा, अतीत के चलचित्र, 'बिट्टो'।
13. महादेवी वर्मा, शृंखला की कड़ियाँ, पृ. 20
14. सं. डॉ. एन आर परमार, महादेवी का रचना संसार, पृ. 329
15. असीम मधुपुरी, महादेवी साहित्य का अभिनव मूल्यांकन, पृ. 97
16. डॉ. गोवर्द्धन सिंह, महादेवी का गद्य-साहित्य : विश्लेषण और स्वरूप, पृ. 25
17. सं. निर्मला जैन, महादेवी साहित्य - 1, पृ. 14